आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:28-01-15

हम भाग्यशाली बच्चों को आत्मा का, तीनों कालों का और तीनों लोकों का एक्यूरेट ज्ञान देकर त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी और त्रिलोकीनाथ बनाने वाले, ज्ञान सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - सवेरे-सवेरे उठ बाप से मीठी-मीठी रुहरिहान करो, बाप ने जो शिक्षा ये दी हैं उन्हें उगारते रहो.

ज्ञान सागर बाप हमें आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र का सारा ज्ञान इसलिए देते है जिसे हम उस पर विचार-सागर-मंथन करें और उसमें से ज्ञान-रत्न निकाले. सवेरे अमृतवेले बाबा से मीठी-मीठी रुहरिहान करें, जैसे की "बाबा, आपने हमें ज्ञान का खजाना देकर मास्टर ज्ञान-सागर बना दिया. भक्ति में हम कुछ भी जानते नहीं थे, अन्धियारे में भटकते थे. आपने हम पर ज्ञान कि वर्सा कर हमें क्या (शूद्र) से क्या (ब्राह्मण) बना दिया." "बाबा, आप तो कितने निरंहकारी हो. आप हमारे गंदे विकारों को लेकर हमें निर्विकारी बना रहे हो, हमें 21 जन्मो का स्वर्ग का वर्सा दे रहे हो." "वाह बाबा वाह, आपका पदमापदम शुक्रिया." ऐसे बाबा से मीठी-मीठी रुहरिहान करनी चाहिए तो खुशी भी रहेगी और बाबा कि करंट जरूर महसूस करेंगे.

बाबा की आज की मुरली से सृष्टि चक्र के ज्ञान पर कहे गये महा-वाक्यों को बाबा की याद में रहकर पढ़ेंगे.

- बाबा कहते हैं मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों, तुम भगवान के बच्चे हो ना. भगवान तुम्हें राह बता रहा हैं. तुम कल्पवृक्ष में पहले-पहले आते हो. नई दुनिया में जाकर राज्य करते हो, फिर सीढ़ी उतरते हो. इसके बीच में इस्लामी, बौद्धि, क्रिश्चियन आते है. बाप अभी सेपलिंग लगा रहे हैं. सवेरे उठकर ऐसे-ऐसे ज्ञान की बातों का रमण करना चाहिए.

- बाबा कहते हैं बच्चों को सवेरे उठकर बाप को याद करना है और खुशी से ज्ञान का सिमरण करना है. जैसे की "अभी हम सारे ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जान चूके है. यह सारे कल्प की आयु 5 हजार वर्ष है. कितना वन्डरफूल ड्रामा हैं. यह ड्रामा मेरे लिए बहुत कल्याणकारी हैं."

- बाबा कहते हैं मीठे-मीठे बच्चे सारे ड्रामा को तुम जान गये हो. बाबा ने तुम्हें कितना सहज रिती बताया है कि यह अनादि, अविनाशी ड्रामा है. इसमें जीतते हैं फिर हारते हैं. अब चक्र पुरा हुआ, अब तुम्हें घर चलना है. बाबा का फरमान है मुझे याद करो.

- बाबा कहते हैं मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ. मैं नहीं बनता हूँ, तुम बच्चों को बनाता हूँ. तुम बच्चों को गुल-गुल बनाकर फिर टीचर बन पढ़ाता हूँ. फिर सद्गति के लिए ज्ञान देकर तुमको शान्तिधाम-सुखधाम का मालिक बनाता हूँ. मैं तो निर्वाणधाम में बैठ जाता हूँ. अभी मैं आया हूँ तुमको वाणी से परे ले जाने के लिए. मैं ज्ञान का सागर हूँ, तुमको ब्रह्मा द्वारा समझाता हूँ. यह सृष्टि चक्र के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान बाप के सिवाय और कोई भी मनुष्य दे न सके.

- बाबा कहते है अभी तुम बच्चों को जो ज्ञान मिल रहा है, उसको सिमरण करने की आदत डालो और दूसरों को भी समझाना हैं. अब तुम्हारी आत्मा पर बृहस्पति की दशा है. वृक्षपति भगवान स्वयं आकर तुमको पढ़ा रहे हैं. भगवान पढ़ाकर तुमको भगवान भगवती बनाते हैं, ओहो! ऐसे बाप को जितना याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे. ऐसे-ऐसे विचार-सागर-मंथन करने की आदत डालनी चाहिए.

- भगवानुवाच बाप समझाते हैं, भगवान पुनर्जन्म रहित है. श्रीकृष्ण तो पूरे ८४ जन्म लेते हैं. तुम समझते हो शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं. वह बाबा, बाप भी है, टीचर भी है और सतगुरु भी है. सदागति देते है. ऊंच ते ऊंच भगवान शिव ही हैं.

- बाबा कहते हैं यह सारा ८४ जन्मो का चक्र है. तुम जानते हो अभी हम ब्राह्मण है फिर देवता, क्षत्रिय....आदि बनेंगे. यह सारा स्मृति में रखना है. रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानना है, जो कोई नहीं जानते हैं. तुम बच्चे ही विश्व के मालिक बनते हो. यह तो कितनी खुशी की बात हैं.

- बाबा कहते हैं मैं तुमको ज्ञान रत्नों से श्रृंगारता हूँ, फिर तुम यह लक्ष्मी-नारायण बनेंगे. ऐसे और कोई कह न सके. बेहद का बाप ही आकर पवित्र प्रवृति मार्ग की स्थापना करते हैं इसलिए विष्णु को भी ४ भूजा दिखाते हैं. जैसे ब्रह्मा बाबा सवेरे उठकर विचार-सागर-मंथन करते है ऐसे बच्चों को भी फोलो फादर करना हैं.

ॐ शांति.